प्रिय प्राचार्य/शिक्षकगण,

मैं राजश्री श्रीनिवासन, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में संकाय सदस्य हूँ। मैं TeachTE नामक की परियोजना की समन्वयक हूँ, जिसका उद्देश्य अनुसंधान, पेशेवर विकास कार्यक्रमों और अधिगम सामग्री के विकास के माध्यम से शिक्षक-शिक्षा में योगदान करना है। इस परियोजना के एक हिस्से के रूप में, हम *'शिक्षकों की दैनिक दुविधाएँ'* विषय पर स्कूल के शिक्षकों से चिंतनशील लेख आमंत्रित कर रहे हैं।

आमतौर पर सभी यह जानते हैं कि स्कूल की कार्यप्रणालियों, नीतियों, पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र, आकलन और स्कूल की भौतिक स्थितियों के संबंध में शिक्षकों को स्कूलों में हर दिन के कामकाज में कई फ़ैसले लेने पड़ते हैं। बच्चों, सहकर्मियों, प्राचार्य, प्रबंधन, समुदाय, कार्यालयीन कर्मचारियों और माता-पिता के साथ शिक्षकों के संबंधों में यह निर्णय साफ़ दिखाई देते हैं। इसके लिए शिक्षकों को हर तरह के हालातों में विचारशील, उद्देश्यपूर्ण प्रतिक्रियाओं और कार्यों में करना ज़रूरी होता है। कई बार शिक्षक रोज़मर्रा की जिस मुश्किल स्थिति का सामना करते हैं, उसका कोई एक 'बिल्कुल सही जवाब' नहीं होता है और उन्हें कठिन नैतिक विकल्पों में चुनाव करना ज़रूरी हो जाता है। । इस प्रकार शिक्षण के पेशे में दुविधाएँ होना आम बात है और एक शिक्षक के रूप में संपूर्ण पेशेवर जीवन में दुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

दुविधा विकल्पों का चुनाव करने की स्थिति में होती है; ऐसी परिस्थितियाँ जिनमें परस्पर विरोधी अपेक्षाओं, प्रतिस्पर्धी मूल्यों या कार्यवाही के क्रम या कार्यवाही की योजनाओं के बीच चयन करना होता है। उदाहरण के लिए, शैक्षणिक प्रदर्शन या फ़िर प्रयासों के लिए विद्यार्थियों का आकलन करने की चिर-परिचित दुविधा। दुविधा कोई कठिनाई या समस्या नहीं है जिसे 'हल' किया जा सकता है। दुविधा की स्थिति में विकल्प तैयार किए जाते हैं और कोई एक विकल्प चुनने का क़दम उठाने के फ़ायदे और नुकसान दोनों होते हैं। कभी-कभी कोई भी विकल्प अनुकूल नहीं होता है। विकल्प चुनने में कुछ बातें हमारे लिए कुछ परेशानी और संदेह की स्थिति निर्मित कर सकती हैं। लेकिन हम उन विकल्पों के साथ जीना सीख सकते हैं। फिर भी, हम अपने उद्देश्य, संदर्भ और स्थिति के प्रति हमारी संभावित प्रतिक्रियाओं के नतीजों को ध्यान में रखते हुए चिंतन करने, तर्क करने, विश्लेषण करने और कार्य करने के बारे में सोचने में लगे रहते हैं। दुविधाओं के दौरान विचार-विमर्श की यही प्रक्रियाएँ हैं जो शिक्षकों को उनके शिक्षण के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं और उन्हें अपने पेशेवर कार्य के बारे में महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करने में मददगार होती हैं। इससे शिक्षकों को अपनी कार्यप्रणालियाँ नवीनीकृत करने और उनकी पुनर्कल्पना करने के लिए शिक्षण के चिंतनशील क्षण उपलब्ध होते हैं।

हम स्कूल के शिक्षकों को ऐसी किसी एक दुविधा पर एक लघु लेख लिखने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं, जिसका सामना उन्होंने बच्चों, सहकर्मियों, प्राचार्य, प्रशासकों, माता-पिता, राज्य सरकार या शिक्षण से जुड़े निजी निकायों या स्कूल प्रणाली से संबंधित किसी अन्य प्रासंगिक भागीदार के मामले में किया हो। '*शिक्षकों की दैनिक दुविधाएँ*' विषय पर लघु लेख आमंत्रित करने के दो उद्देश्य हैं :

1. यह आपके पेशेवर विकास के लिए एक अवसर प्रदान करता है, क्योंकि यह अभ्यास आपको अपनी धारणाओं, प्रथाओं, विचारों और अनुभवों को लिखने के लिए एक संदर्भ प्रदान करेगा।
2. शिक्षकों के रूप में अपने अनुभव साझा करना कक्षाओं की ज़मीनी वास्तविकताएँ दर्शाता है और यह सेवाकालीन शिक्षक विकास कार्यक्रमों, शिक्षक तैयार करने वाले कार्यक्रमों, एम.ए एजुकेशन कार्यक्रमों में इस्तेमाल करने के लिए और अन्य शैक्षिक पेशेवरों के लिए सीखने की सामग्री का एक समृद्ध स्रोत होगा। इन लेखों का संकलन अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

हम आपको इस चिंतनशील सफ़र में शामिल होने और अपने अनुभव और अनुभवात्मक ज्ञान को हमारे साथ साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं। लेख लिखने के प्रारूप और अन्य जानकारी के लिए कृपया संलग्नक-1 देखें।

किसी भी तरह की पूछताछ के लिए कृपया हमें teachte@apu.edu.in पर लिखें या Md Hasan Mondal, Research Associate, Project TeachTE, School of Education, Azim Premji University, Bengaluru पते पर संपर्क करें। संपर्क के लिए नंबर है 7895091685 ।

धन्यवाद!

सादर

राजश्री श्रीनिवासन

प्रोफ़ेसर

स्कूल ऑफ़ एजुकेशन

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय

बेंगलूरु

दिसंबर 16, 2022

लेखों के लिए आमंत्रण

शिक्षकों की दैनिक दुविधाएँ

विवरण

1. लेख की शब्द सीमा 900-1200 शब्द होनी चाहिए।
2. लेख यथासंभव संलग्न प्रारूप के अनुसार होना चाहिए।
3. एक लेख के ज़्यादा-से-ज़्यादा तीन शिक्षक संयुक्त लेखक हो सकते हैं।
4. सरकारी, निजी, सरकारी सहायता प्राप्त और अंतर्राष्ट्रीय स्कूलों के वे सभी शिक्षक जो वर्तमान में स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों, जैसे - प्री-स्कूल, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर पढ़ा रहे हैं, वे सभी लेख लिखने के लिए पात्र हैं। विशेष विद्यालयों/शिक्षा केंद्रों के शिक्षकों को भी अपनी दुविधाओं के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
5. यह लेख अंग्रेज़ी या किसी भी भारतीय भाषा में हो सकते हैं।
6. लेख समीक्षा प्रक्रिया से गुजरेंगे। चयनित लेखों के लेखकों को लेख-प्रस्तुतीकरण के लिए विश्वविद्यालय में कॉन्फ्रेंस के लिए आमंत्रित किया जाएगा।
7. लेख लिखने के लिए कोई मानदेय या पारिश्रमिक देने का प्रावधान नहीं है।
8. चयनित लेख एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए जाएँगे। सभी लेखकों को पुस्तक की एक-एक छपी हुई प्रति भेंट की जाएगी।
9. शिक्षक व्यक्तिगत रूप से लिख सकते हैं। लेख में शिक्षक का नाम/शिक्षकों के नाम होंगे। यदि आप स्कूल का नाम शामिल करना चाहते हैं तो आप अपने स्कूल से आवश्यक अनुमति लेकर सहमति फॉर्म पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। स्कूलों के माध्यम से आने वाले शिक्षकों को भी सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने होंगे। ऐसे शिक्षक भी लिखने के लिए आमंत्रित हैं जो अपनी दुविधाएँ साझा करना चाहते हैं, लेकिन अंतिम प्रकाशन में अपनी पहचान से जुड़ी जानकारी ज़ाहिर नहीं करना चाहते हैं।
10. लेखों के लिए यह आमंत्रण विभिन्न फ़ाउण्डेशनों के व्यक्तियों के लिए भी खुला है, जो 2017 से अब तक की अवधि में लगातार कम-से-कम दो वर्षों के लिए नियमित स्कूल शिक्षण में लगे रहे हैं। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी जो 2017 से अब तक कम-से-कम दो वर्षों से लगातार नियमित स्कूल शिक्षण में लगे हुए हैं, वे भी अपनी प्रविष्टियाँ भेज सकते हैं।
11. लेकिन यह आमंत्रण होम ट्यूशन, होम स्कूलिंग और कोचिंग सेंटरों में मदद करने वाले शिक्षकों के लिए नहीं है।
12. लेख प्राप्त करने की अंतिम तिथि 1 अप्रैल 2023 है। कृपया अपना लेख पूर्ण विवरण सहित निम्नलिखित ई-मेल पते पर भेजें : teachte@apu.edu.in

<u>विषय-वस्तु एवं प्रारूप</u>

स्कूलों में शिक्षकों को तरह-तरह की दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। इनमें से कुछ दुविधाएँ हैं : सभी विद्यार्थियों पर ध्यान देना या उन विद्यार्थियों पर ध्यान देना जो ज़रूरतमंद हों; शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए अंक देना या प्रयासों के लिए अंक देना; प्रशासकों द्वारा लिए जाने वाले वे निर्णय जो शिक्षकों के लिए टकराव की स्थिति पैदा कर सकते हैं; शिक्षकों का अपने साथियों या बच्चों के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार; विद्यार्थियों की समस्याएँ माता-पिता के साथ साझा करना; केंद्रीकृत पाठ्यक्रम का पालन करना या छात्रों की तैयारी के स्तर के अनुसार प्रतिक्रिया देना; दयाभाव बनाम समानता; कक्षा में अनुशासन; धार्मिक मूल्यों का पालन; लचीलापन बनाम स्कूल के नियमों का अनुपालन; कक्षाओं में संरचना और स्वायत्तता; उदारतावाद या समाज /सांस्कृत के मूल्य। यह कोई परिपूर्ण सूची नहीं है। यह सिर्फ़ आपको दुविधापूर्ण स्थितियों का अर्थ समझने में मदद करने के लिए दी गई है। आप अपनी एक विशिष्ट दुविधापूर्ण स्थिति चुन सकते हैं जिसे आपने एक स्कूल शिक्षक के रूप में अनुभव किया हो।

लेख का प्रारूप निम्नानुसार होना चाहिए :

1. दुविधा का शीर्षक :
2. व्यक्तिगत विवरण/व्यवस्थाओं (settings)/ परिस्थितियों (context) संबंधी विवरण :
    i. नाम :
    ii. जेंडर :
    iii. स्कूल का प्रकार : निजी/सरकारी/सहायता प्राप्त
    iv. स्थान : (राज्य, जिला, तालुक/गाँव कानाम लिखें)
    v. आपके द्वारा पढ़ाई जाने वाली कक्षा :
    vi. आपके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषय :
    vii. आपके द्वारा पढ़ाई जाने वाली कक्षा/ओं में बच्चों की संख्या :
    viii. शिक्षण कार्य अनुभव के वर्ष : कृपया अवधि का उल्लेख करें
    ix. योग्यता/एँ :
3. एक दुविधा की पहचान करें और उस स्थिति का वर्णन करें जो दुविधा का कारण बनी और दुविधा का उल्लेख करें।
4. आपके प्रतिस्पर्धी/परस्पर विरोधी विचार/मूल्य/अपेक्षाएँ क्या थीं?
5. आपने क्या कार्यवाही की?
6. वर्तमान कार्यवाही के बारे में निर्णय लेने के लिए आपको किस बात से मार्गदर्शन मिला?
7. दुविधा के समय आपने कौन-सी अन्य कार्यवाही/कार्यवाहियाँ करने पर विचार किया?
8. आपकी प्रतिक्रियाओं/कार्यवाहियों पर दूसरों की क्या प्रतिक्रिया थी?